विजय संदेश की रचनाधर्मिता

# रंग और रेखाएं

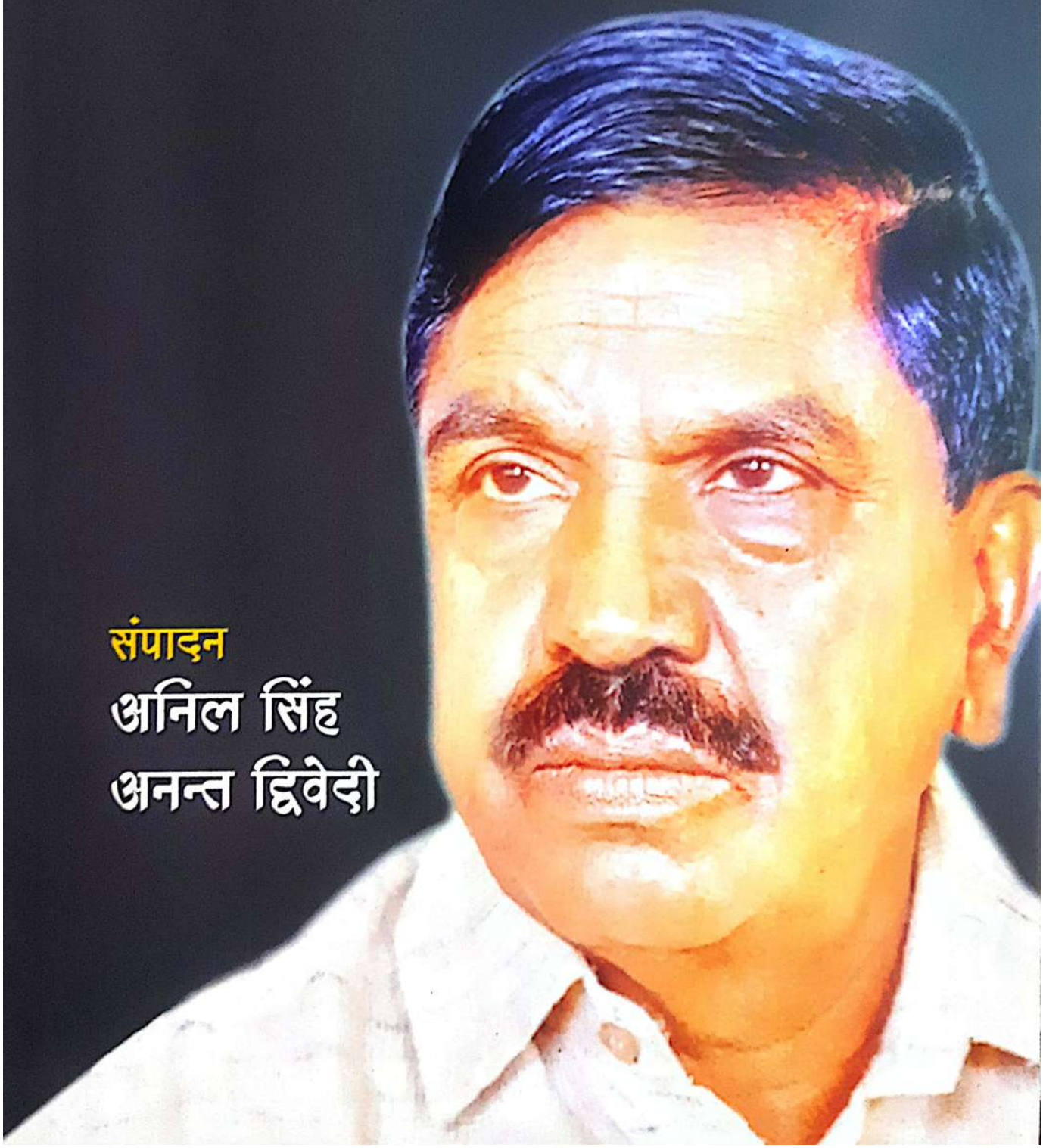

संपादन
अनिल सिंह
अनन्त द्विवेदी

Scanned with OKEN Scanner

# अनुक्रम


| | | |
|---|---|---|
| पुरोवाक् | | 7 |

## व्यक्ति और कविता

| | | |
|---|---|---|
| देखन में छोटन लगैं, घाव करें गंभीर के विग्रह : विजय सन्देश | –डॉ. जंग बहादुर पाण्डेय 'तारेश' | 13 |
| यारों के यार : सन्देश विजय कुमार | –धनराज शम्भु | 25 |
| विजय सन्देश : व्यक्तित्व से कृतित्व तक | –प्रो. गजेन्द्र कुमार सिंह | 29 |
| अँधेरे के विरुद्ध : किसिम-किसिम की कविताएँ | –डॉ. (प्रो.) ए. अच्युतन | 35 |
| अँधेरे के विरुद्ध–उम्मीद जगाती कविताएँ | –डॉ. बाबू जोसफ | 41 |
| विजय 'सन्देश' की कविताओं का संवेदनापरक अध्ययन | –डॉ. अनन्त द्विवेदी | 48 |
| विजय सन्देश की कविता में मानवतावाद | –डॉ. चन्द्रमा सिंह | 57 |
| अँधेरे के विरुद्ध : प्रतिरोध की कविताएँ | –विनोद कुमार राज 'विद्रोही' | 62 |
| विजय कुमार सन्देश और उनकी कविताएँ : अँधेरे से उजाले की ओर | –डॉ. मुकुंद रविदास | 71 |
| अँधेरे के विरुद्ध में लघुदीप का जीवन-संघर्ष और शौर्य की अभिव्यक्ति | –अंजली रंजन | 81 |
| उजाले की ओर : मानव उन्नयन की आशा | –प्रो. (डॉ.) अनिल सिंह | 85 |
| उजालों से रू-ब-रू कराती कृति 'उजाले की ओर' | –डॉ. अमिता द्विवेदी | 91 |
| उजाले की ओर : साधारण से असाधारण की ओर | –डॉ. राजू राम | 98 |
| विजय कुमार सन्देश का जीवन-दर्शन और अनुभव-सृष्टि | –डॉ. अमृता धीर | 104 |
| संवाद : विनय कुमार के सवाल और विजय सन्देश के जवाब | –डॉ. (प्रो.) विनय कुमार | 109 |

## याला-साहित्य

### उड़ता चल हारिल

| | | |
|---|---|---|
| 'उड़ता चल हारिल' में अभिव्यक्त याला-बिम्ब | –डॉ. अनिल सिंह | 121 |


Scanned with OKEN Scanner

# उजाले की ओर : मानव उन्नयन की आशा

*–प्रो. (डॉ.) अनिल सिंह*

झारखंड की जीवट धरती ने भारत भूमि को एक से बढ़कर एक रत्न दिये हैं, जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में जिन्होंने अपनी सार्थक उपस्थिति दर्ज कराई है। उसी जीवट धरती से आने वाले कवि विजय कुमार सन्देश भी ऐसे ही एक रत्न हैं। हिन्दी साहित्य को अपनी गरिमामय उपस्थिति और लेखनी से उन्होंने समृद्ध करने का काम किया है। उनका पहला कविता-संग्रह 'अँधेरे के विरुद्ध' एक नयी ऊर्जा और विश्वास से भर देने वाली कविताओं का अनोखा संग्रह था। 'उजाले की ओर' उनका दूसरा कविता-संग्रह है। इस संग्रह की कविताएँ जीवन के विभिन्न पक्षों और संवेदनाओं को समेटे हुए हैं। इस संग्रह की कविताएँ हर्ष, विषाद और मानव जिजीविषा का अनोखा गुलदस्ता है, जो सचमुच बिना किसी दुराग्रह के सम्पूर्ण मानवीयता को उजाले की ओर बढ़ने का आवाहन करते दिखाई देती है।

इस संग्रह में यदि देखा जाये तो समस्त कविताएँ कुछ विशिष्ट श्रेणियों में श्रेणीबद्ध की जा सकती हैं। पहली श्रेणी ऐसी कविताओं की है जो जीवन के प्रति भावात्मक सन्देश देती दिखाई देती हैं, जैसे 'उजाले की ओर', 'एक दीया जलाना है', 'पुष्प : प्रकृति के शृंगार', 'जीवन के पैंसठ वसन्त' आदि कविताएँ। दूसरी श्रेणी उन कविताओं की है जो हजारों वर्षों के मानवीय संघर्ष और जिजीविषा को नये अर्थ देती दिखाई देती हैं, जैसे 'पत्थरों को बना दिया सोना', 'छोटे कदमों के बड़े लक्ष्य', 'संघर्ष, संगठन और एकता', 'लोक-यज्ञ अनुष्ठान', 'किताबें, संस्कृति और इतिहास' आदि। तीसरी श्रेणी में वे कविताएँ की हैं जिसमें उनका निश्रात जीवन-दर्शन उभर कर आया है। ऐसी कविताएँ भी दोहरी प्रकृति की हैं, एक जिनमें जीवन-दर्शन बहिर्मुखी होकर प्रकट हुआ है और एक जो खुद से आत्मालाप करती कविताएँ हैं। जैसे 'नया वर्ष', 'एक नया संसार बसायें', 'जीवन', 'आत्मनिरीक्षण', 'आँसू', 'प्रेम : जगत का प्रकाश', 'प्रकृति और सृजन' आदि। चौथी श्रेणी ऐसी कविताओं की है जिसमें मनुष्य और प्रकृति के बीच खत्म होते सम्बन्धों को अत्यन्त विषादमय शैली में चित्रित किया गया है। जैसे 'कंक्रीट के पहाड़', 'मेरा वह गाँव कहाँ गया' आदि कविताएँ। पाँचवीं श्रेणी की कविताओं में उन्होंने प्रकृति के बड़े मनोहर दृश्य प्रस्तुत किए हैं। जैसे 'पर्वतराज हिमालय', 'पहली फुहार', 'वसन्त आ गया है', 'वासन्ती साँझ' आदि कविताएँ। छठवीं श्रेणी ऐसी कविताओं की है जिसमें उन्होंने अपने जीवन को नये अर्थ देने वाले रिश्तों को बड़ी शिद्दत से याद किया है। जैसे

Scanned with OKEN Scanner

'माँ की साँस में' तथा 'पिता की साधना में' जैसी कविताएँ।

इस संग्रह में कुल बत्तीस कविताएँ संकलित हैं और यदि परिशिष्ट के रूप में दी गयी पाँच कविताओं को जोड़ दिया जाये तो यह संख्या कुल सैंतीस ठहरती है। इन कविताओं में विजय सन्देश जी ने संवेदना के अलग-अलग शब्दचित्र अत्यन्त सार्थकता से प्रस्तुत किए हैं। इस लेख के माध्यम से हम विजय सन्देश की इन्हीं अलग-अलग संवेदनाओं को अभिव्यक्त करती कविताओं पर एक दृष्टि डालने का काम करेंगे। सिर्फ एक कवि ही नहीं बल्कि हर सहृदयी की चाहतें सम्पूर्ण मानवीयता के सन्दर्भों को चरितार्थ करती हैं। कवि तो उन चाहतों को अभय अभिव्यक्ति देता है। यह जगत हमेशा से स्वार्थ के धन्धों के कारण विकृत होता रहा है। 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' और 'छोटी मछली-बड़ी मछली' का सिद्धान्त इस व्यावहारिक जगत का सबसे प्रासंगिक सिद्धान्त रहा है। हजारों वर्षों के इतिहास को सामने रखकर देखा जाये तो हमें गहन अंधकार ही अंधकार दिखाई देता है। पर इसी अंधकार के बीच दीपक की एक रोशनी के समान कवि की ऐसी कामनाएँ भी इतिहास के अलग-अलग दौर में मौजूद हैं–

*"गहन अंध मिटे, बंध तिमिर कटे/काले, स्याह बादल छँटे*
*इस ठौर नहीं, उस ठौर चलें/चलो, उजाले की ओर चलें।"*

कवि की यह तमन्ना कोई ऐसी तमन्ना नहीं है या कोई ऐसी माँग नहीं है जो नाजायज हो। दरअसल यह तमन्ना और यह माँग इस अनोखी दुनिया की खूबसूरती को बनाये रखने की पहली शर्त है। उजाला जीवन की धड़कनों की अनिवार्य शर्त है। वह चाहे सूरज का हो और चाहें मानवीयता का। बिना उजाले के कहीं भी रह पाना सम्भव नहीं है। यह उजाला कुछ और नहीं बल्कि ऐसे विचार और सिद्धान्त हैं, जहाँ इंसान को इंसान समझने की समझ मौजूद है। कवि जानता है कि उजालों की तलाश केवल शब्दों से ही पूरी नहीं होगी। एक पूरा संघर्ष उसके लिए अनिवार्य है। ऐसा नहीं कि यह संघर्ष इससे पहले कभी होता नहीं रहा या ऐसी कविता कभी लिखी जाती नहीं रही। इंसानियत समय-समय पर अपनी घुटन से मुक्ति पाने का प्रयास करती रही है और यह भी उतना ही सच है कि उसे इस घुटन से मुक्ति कभी मिल नहीं सकी। घुटन से मुक्ति नहीं मिली, इसका यह अर्थ नहीं है कि मुक्ति की कोशिशें भी बंद कर दी जायें। ऐसी बातों को तरजीह देना बंद कर दिया जाये या ऐसी तमन्नाओं का गला घोट दिया जाये। पीढ़ियाँ खत्म होती रहेंगी, पीढ़ियाँ आती रहेंगी और ऐसे लोग भी मौजूद समय-समय पर होते रहेंगे जो इस तरह का सन्देश देते रहेंगे, जो इंसानियत और जगत को बचाने और बनाये रखने के लिए जरूरी हैं–

*"गमों की आँधियाँ आये, तो भी गम नहीं,*
*हमें हर संकट से खुद को बचाना है।*
*घुप्प अँधेरे में खो गया हो कहीं सवेरा*
*तो, हर अँधेरे के विरुद्ध एक 'दीया' जलाना है।"*

Scanned with OKEN Scanner

विजय कुमार सन्देश का जन्मना सम्बन्ध झारखंड की करोड़ों वर्ष पुरानी धरती से है। यह धरती अग्नि परीक्षाओं की धरती है, जहाँ इंसान अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए लगातार संघर्षरत रहा है। कभी न हार मानने का जज्बा यहाँ की हवाओं में हमेशा से बहता रहा है। जीवटता यहाँ की मिट्टी में घुली-मिली रही है और यह जीवटता लोगों में और उनके ख्यालों में बराबर दिखाई देती है। इसी जीवटता को कवि ने अनुभूत किया अपने मॉरीशस प्रवास काल में। उल्लेख्य है कि बिहार-झारखण्ड के हजारों लोग 'गिरमिटिया मजदूर' बनकर मॉरीशस गये थे। अपनी जिजीविषा, कर्मठता और श्रम-सीकर से सींचकर मॉरीशस को आबाद किया और एक समृद्ध राष्ट्र का नाम दिया। अपनी उसी अनुभूति को अभिव्यक्त करते हुए कवि कह रहा है–

*"दर-बदर जीवन, लात-घूँसों, ठोकरों से बुझा अन्तर्मन*
*अंगारों, बोरों-टाटों से सिला-बंधा जीवन*
*काँटों भरी राह, रहा जीर्ण-शीर्ण यौवन*
*देहबंदी, जुबाँबंदी, शर्तबंदी से थका तन-मन*
*खोल अतीत के स्वर्ण-पृष्ठ, कर आराध्य आराधन*
*बिना साधन, बिना संगठन, बिना संसाधन*
*दुख माँजकर इंच-इंच धरती पर उगा दिया सोना*
*लहू से सींचकर अपने, पत्थरों को ही बना दिया सोना।"*

दरअसल यह एक सच है जिसे कवि ने अभिव्यक्त किया है, जिसे हम सबको समझना होगा। सच यह भी है कि किसी शक्ति ने यह धरा निर्मित करके विरासत में हमें दे दी है। अब इस धरा को नये-नये रंगों से सजाना और सँवारना हमारी जिम्मेदारी है। अपनी इस जिम्मेदारी को हम किस तरह से पूरा करते हैं, यह हम पर निर्भर करता है। कवि ने सम्पूर्ण मनुष्यता की तुलना दो तरह के फूलों से करते हुए एक जगह हमको यही समझाने का प्रयास किया है। दरअसल सृजन और ध्वंस अलग-अलग तरह की विपरीत प्रवृतियाँ हैं और ये प्रवृत्तियाँ सदियों से इस जगत में मौजूद है। ठीक वैसे ही जैसे अँधेरा और उजाला पाप और पुण्य आदि। हम कह सकते हैं कि यह जगत विपरीत प्रवृत्तियों में बंधा और सजा हुआ है और इन्हीं में से सही का चयन करना हमारी अपनी समझ और सोच पर निर्भर करता है। इसी तथ्य को इन शब्दों में अभिव्यक्त करते हुए कवि कहता है–

*"ये पुष्प दो तरह के होते हैं–*
*एक, जिसमें सुन्दरता होती है, सुगंध नहीं*
*दूजे, सुन्दरता भी होती है और सुगंध भी*
*हमें कौन-सा पुष्प होना है?*
*जिसमें सुन्दरता तो है सुगंध नहीं*
*या कि जिसमें सुन्दरता भी है और है सुगंध भी।"*

Scanned with OKEN Scanner

आज की दुनिया में भी दो तरह के लोग हैं। एक, जो कंचन और कामिनी से सजे हुए हैं। उनमें सौन्दर्य तो बहुत है पर महक बिल्कुल भी नहीं है। यह महक आखिर कौन सी महक है। दरअसल यह महक किसी की ओर मदद का हाथ बढ़ा देने की महक है, यह महक इंसानियत की महक है। एक वर्ग इस महक से मरहूम है। वह दिखता तो बहुत सुन्दर है पर यह सुन्दरता दरअसल एक छलावा है। वहीं दूसरी तरफ ऐसे लोग भी है–भले ही वह कम है, पर आखिर हैं तो सही– जिनमें वास्तविक सौन्दर्य बसता है। जो सचमुच मानवीय है और मानवता को बचाना चाहते हैं, जो चाहते हैं कि यह धरती सही मायनों में सुन्दर बने, जो चाहते है कि हर किसी को उसका अपना वाजिब अधिकार मिले, जो चाहते है कि संसाधनों का बँटवारा कुछ इस तरह से हो कि यह संसार एक सन्तुलित स्थिति में दिखाई दे। यही वह असली महक है, जो हम लोगों में दिखाई दे रही हैं। पर एक तरफ यह बात हमें आश्वस्त करती है कि कम मात्र में ही सही पर जो वास्तविक सुन्दरता और महक है, वह आखिर अभी हमारे बीच शेष है। असल में इस दुनिया के लिए सबसे पहले जरूरी है– एक ख्वाब। एक ऐसा ख्वाब, जिसे सच बनाकर इस दुनिया को बदलाव की बयार में सम्मिलित किया जाये। ऐसा ही एक ख्वाब कवि भी देखता है–

*"आओ एक नया संसार बसायें/समतामूलक संसार बसायें।*
*एक ऐसा संसार/एक ऐसी छोटी-सी दुनिया*
*जिसमें न हो कोई छोटा/और न कोई बड़ा*
*न कोई गरीव, न कोई अमीर/जिसमें न हो काले-गोरे का भेद*
*और न रंग, वर्ग, वर्ण, नस्ल का भेद।"*

हजारों वर्षों से यह धरती कभी रंग, कभी वर्ग, कभी वर्ण, कभी नस्ल को लेकर आपस में टकराती रही है। और, सही मायनों में देखा जाये तो यह संघर्ष आज भी इस धरा पर मौजूद है। लोग अभी भी जाति, वर्ण, धर्म, संप्रदाय, रंगभेद जैसी कलुषित भावनाओं में लिप्त हैं। हिंसा जैसी प्रवृत्ति इन्हीं के चलते सामाजिक दायरों में बीच-बीच में उभरकर आती है और दावानल बनकर एक बड़ी आबादी शहर के शहर को अपनी चपेट में ले लेती है। दशकों की मेहनत कुछ ही क्षणों में आग के हवाले झोंक दी जाती है। छूरे-तलवारें और गोलियाँ चलती हैं। इंसान गाजर-मूली की तरह कटता है। अगर इतिहास की तरफ नजर डालें तो पाएँगे कि पूरी दुनिया को अपनी आगोश में ले लेने वाला दूसरा विश्वयुद्ध जाति और रंगभेद जैसी प्रवृत्तियों के चलते और ज्यादा भड़का था। यह ऐसा युद्ध था जिसमें पूरी धरती युद्ध का मैदान बन गयी थी। यूरोप पूरी तरह से बर्बाद हो गया था। सैकड़ों वर्षों की मेहनत से धीरे-धीरे विकसित हुई मानवता अचानक इतनी अमानवीय कैसे हो सकती है? क्या मनुष्य अभी भी बर्बर है? हमारा विकास आखिर किस तरफ है? हम अपने को विकसित कैसे कह सकते हैं? विकसित होने का अर्थ क्या है? क्या वास्तविकता यह नहीं है कि हमने ऊपरी आवरण तो बदल लिया है अर्थात खुद को सजा तो बहुत लिया है पर भीतर की महक अब भी गायब है। कवि के अपने इन्हीं

Scanned with OKEN Scanner

विद्रूप अनुभवों से उसने अपना दर्शन विकसित किया है। दरअसल सही मायनों में पूरी मनुष्यता को आत्मनिरीक्षण की आवश्यकता है। इसीलिए कवि कहता है–

*"आत्मनिरीक्षण क्या है?/जीवन का सांगोपांग परीक्षण*
*सम्यक मूल्यांकन/दुर्बलताएँ दोष-गुणों का पर्यवेक्षण*
*अपेक्षित परिमार्जन/तन-मन-प्राण परिबंधन*
*सद्गुण अर्जन/आत्मविश्वास परिवर्धन*
*आत्मनिर्माण और आत्म-संवर्धन है।"*

आत्मनिरीक्षण की आवश्यकता क्यों है? दरअसल हमारा यह मानना है कि पूरी दुनिया में मध्य युग के बाद जब औद्योगिक क्रांति का समय आया तो हमने विज्ञान के माध्यम से बड़ी तरक्की की और नये-नये आविष्कारों से जीवन को सजाया और सँवारा, विकास की नयी-नयी परिभाषाएँ लिखीं। परन्तु सही मायने में देखा जाये तो यह विकास आज हमें जिस मोड़ पर ले आया है, वह एक ऐसा मोड़ है, जहाँ पतन अपने नये-नये रूपों में हमारा इंतजार कर रहा है। मनुष्य को भावनात्मक स्तर के साथ-साथ भौतिक स्तर पर भी एक पराभव महसूस हो रहा है। और कवि इसी मोड़ पर आत्मनिरीक्षण की आवश्यकता को महसूस कर रहा है। सही मायनों में जीवन है क्या? कवि की नजर में जीवन जीने की कला अगर ठीक है, तो जीवन सुख है और अगर यह कला ठीक नहीं है तो दुख है। दरअसल मानवीय सरोकार ही ऐसे तत्व हैं जो जीवन जीने की कला को सकारात्मकता देते हैं। कवि जीवन के इसी पहलू को स्वर देते हुए कहता है–

*"जीवन सुख है/जीवन दुःख है*
*जीवन सुख-दुःख का संगम है।*
*जीवन जीने की कला/सही है यदि*
*तो जीवन सुख है/और यदि नहीं है सही*
*तो जीवन दुख है।"*

विजय सन्देश की कविताएँ निराशा के रास्ते चलते हुए एक आशावाद की ओर जाती हुई दिखाई देती हैं। इस धरती का जो रूप उन्हें देखने को मिल रहा है, वह उन्हें निराश करता नजर आता है। पर एक कवि की आस्था उसकी आशाएँ होती हैं। आशाओं का बयान उसे सार्थक कविताओं से सुशोभित करता है। विजय सन्देश भी आशा और विश्वास के कवि हैं। उन्हें मालूम है कि सारी विपरीत परिस्थितियों के बावजूद यह दुनिया एक दिन बदलेगी और उन्हें यह स्थितियाँ दिखाई भी दे रही हैं। इसीलिए वे लिखते हैं–

*"परिवर्तन की शुभ बयार चल पड़ी है,*
*नयी चेतना उभरती दिख रही है*
*अकल्पनीय और अपेक्षित जड़ताएँ*
*अब टूटती-बिखरती दिख रही हैं।*

Scanned with OKEN Scanner

*अविश्वसनीय पर नूतन परिवर्तन*
*पूरे रंगत में अब दिख रही है।"*

दरअसल विजय सन्देश जीवन की निराशाओं को सार्थक आशाओं में बदलने वाले कवि हैं। पहले भी उनका एक संग्रह आ चुका है और अब यह संग्रह इस धारणा को और पुष्ट बनाता है। उजाले की ओर संग्रह की कविताएँ जीवन की नयी आशा की कविताएँ हैं। जीवन और जगत को एक नये संकल्प की ओर ले जाने वाली कविताएँ हैं। इस संग्रह को पाकर विजय सन्देश से आशाएँ और बढ़ गयी हैं। जीवन और जगत को देखने की उनकी विशिष्ट दृष्टि हिन्दी कविता को नये बिंबों, नये प्रतीकों और नयी संवेदनाओं से समृद्ध करती जा रही है। उनकी कविताओं को पढ़ते हुए एक सुखद एहसास होता है। उनके आशावाद को देखकर मन में नयी आशाओं का संचार होता है। आशाओं का संचार सही मायनों में उनकी कविताओं की सार्थकता है।

## सन्दर्भ

1. उजाले की ओर, स्वाक्षर, नयी दिल्ली, पृ. 5, सं. 2022
2. एक दीया जलाना है, पृ. 7, वही
3. पत्थरों को बना दिया सोना, पृ. 9, वही
4. पुष्प : प्रकृति के शृंगार, पृ. 42-43, वही
5. एक नया संसार बसायें, पृ. 33, वही
6. आत्मनिरीक्षण, पृ. 44, वही
7. जीवन, पृ. 40, वही
8. परिवर्तन, पृ. 5, वही

Scanned with OKEN Scanner

# 'उड़ता चल हारिल' में अभिव्यक्त यात्रा-बिम्ब

–डॉ. अनिल सिंह

हिन्दी में यात्रावृत्तों की एक लम्बी परम्परा है और भारतेंदु काल से ही यात्रा-वृत्तांत लिखे जा रहे हैं। देश-विदेश व स्थान विशेष की यात्रा के दौरान अपने अनुभवों और न भूलने वाले क्षणों को लिपिबद्ध करना, दूसरों से उसे साझा करना ही अभिव्यक्ति का सुगम माध्यम है। यायावरी भी एक नशा है, जिसे लग जाता है उसे चैन से बैठने नहीं देता। यात्रा-साहित्य आज एक स्वतन्त्र विधा के रूप में उभर कर आयी है, जबकि पहले इसे संस्मरण और निबन्ध का ही रूप समझा जाता था। भारतेंदु के 'सरयू पार की यात्रा', पंडित कन्हैयालाल मिश्र कृत 'हमारी जापान यात्रा', महापंडित राहुल सांकृत्यायन कृत 'मेरी तिब्बत यात्रा' आदि के यात्रा-साहित्य देश-विदेश के विभिन्न संस्कृतियों और समाज का यथार्थ अंकन करते हैं।

हिन्दी का यात्रा-साहित्य स्वातन्त्र्योत्तर युग में और भी समृद्ध हुआ। वैज्ञानिक प्रगति के बढ़ते उपादानों ने यातायात के साधनों को दिन पर दिन और आसान कर दिया है। परिणामस्वरूप देश-विदेश की यात्रा के प्रति लोगों का आकर्षण बढ़ता ही जा रहा है। चीन, जापान, रूस, फ्रांस, श्रीलंका, मॉरीशस आदि देशों की यात्रा का मार्मिक चित्रण यात्रावृत्त के जरिए आनन्दित करने वाला है। निर्मल वर्मा की 'चीड़ों पर चाँदनी', श्रीकांत वर्मा कृत 'अपोलो का रथ', विष्णु प्रभाकर कृत 'हिमालय', डॉ. नगेंद्र कृत 'अप्रवासी की यात्रायें', इसी तरह अमृतलाल वेगड़ की 'अमृतस्य नर्मदा' यात्रा-साहित्य का सुन्दर प्रमाण माना जा सकता है।

डॉ. विजय कुमार 'सन्देश' बीसवीं शताब्दी के आठवें-नवें दशक के कवि रचनाकार हैं। वे 'एक संवेदनशील कवि होने के साथ-साथ गद्य लेखक के रूप में, अनुसंधित्सु और विश्लेषक के रूप में अधिक लोकप्रिय हैं। जहाँ तक यात्रा-साहित्य की बात है, उनकी खूबी यह है कि छोटे-छोटे यात्रावृत्त लिखते हैं।'[1] 'मेरी अंडमान यात्रा' इसका सबसे सुन्दर उदाहरण कहा जा सकता है। अंडमान द्वीपसमूह हिन्द महासागर की गोद में बसा हुआ वह भारतीय भूखंड है जहाँ केवल जलयान या वायुयान से ही जाया जा सकता है। इसी वृत्त से उनकी जीवन्त अभिव्यक्ति की एक बानगी, "ओपन थिएटर के पास मौन साक्षी बनकर बरसों के संघर्ष की, पीड़ा की और यातना की हजारों कहानियों को समेटे वह पीपल का पेड़ आज भी खड़ा है, जो साँय-साँय करती हवा के माध्यम से हम सबसे कह रहा है कि इस मिट्टी को नमन करो, इसी मिट्टी में हजारों बलिदानियों का

Scanned with OKEN Scanner

बलिदान दफन है।" इधर के लेखकों ने भी कुछ अच्छे यात्रावृत्त लिखे है। वर्ष 2020 में 'उड़ता चल हारिल' प्रकाशित हुआ, हिन्दी के उन्ही यात्रावृत्तों की अगली कड़ी के रूप में। 'सुप्रसिद्ध कवि और लेखक समीक्षक के रूप में समादृत डॉ. विजय कुमार 'सन्देश' द्वारा लिखे गये ये यात्रावृत्त उनकी देश-विदेश की यात्राओं पर आधारित है।'[2] यह यात्रायें केवल दिल-बहलाव नहीं है। यह एक जिज्ञासु की यात्रायें हैं, जिसे इतिहास, समाज और संस्कृति से गहरा लगाव है। पुस्तक में कुल तेरह संस्मरण हैं जो दो भागों में विभाजित है। भाग एक के अन्तर्गत प्रथम छह संस्मरण भारतीय भू-भाग की साहित्यिक और सांस्कृतिक यात्राओं पर आधारित हैं, जबकि भाग दो में विदेशी यात्राओं पर आधारित सात उल्लेखनीय यात्रावृत्त है। डॉ. विजय कुमार 'सन्देश' के इन यात्रावृत्तों में भारत के विभिन्न क्षेत्रों – हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, झारखंड, अंडमान-निकोबार, महाराष्ट्र, केरल की यात्रायें तथा विदेशी यात्राओं में मॉरीशस, आबू धाबी-दुबई, रूस, श्रीलंका, ऑस्ट्रेलिया, यूरोप और भूटान की साहित्यिक और सांस्कृतिक यात्रायें सम्मिलित हैं। इन्हें पढ़ते हुए पाठक उन दृश्यों को सचित्र महसूस करता है। क्षेत्र विशेष की सांस्कृतिक विरासतें, वहाँ का इतिहास, वहाँ की बोली-भाषा, खानपान– जो कि संस्कृति का विशिष्ट हिस्सा होता है, सबका अत्यन्त विस्तारपूर्वक और सार्थक चित्रण इन संस्मरणों में मिलता है। इन संस्मरणों को पढ़ते हुए कुछ ऐसे तथ्य भी पढ़ने को मिलते हैं, जो केवल एक जिज्ञासु यायावर ही दे सकता है। इस ढंग से वे पुस्तकों में नहीं मिलते।

लेखक के लिए यह यात्रायें एक अलग ही तरीके का अनुभव हैं, "मुझे लगता है कि मेरी यह यात्रायें मेरी सृजनात्मकता की महत्त्वपूर्ण कड़ी हैं, जो हमेशा मुझे एक नया सन्देश, एक नया पैगाम देती रही हैं। प्रकृति की छाँव में बैठकर मुझे कुछ नया सोचने, जंगलों, पहाड़ों, नदियों, पेड़ों-लताओं और पशु-पक्षियों से रू-ब-रू होकर कुछ नये अनुभवों से गुफ्तगू करने का अवसर मिलता रहा है। इसी तरह नयी जगहों और इतर संस्कृति को जानने की इच्छा, प्रकृति को करीब से जानने-समझने का सुअवसर भी मिलता रहा है। मैंने वहाँ की प्रकृति, पर्यटन-स्थल, पर्यावरणीय शुचिता सहित वहाँ की संस्कृति और परिवेश से तालमेल बैठाने की कोशिश की है तथा उस क्षेत्र विशेष की ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति को भी यत्किंचित जानने का प्रयास किया है।" इस तरह लेखक की ये यात्रायें लेखक को नये-नये अनुभवों से संपन्न बनाने में योगदान देने वाली यात्रायें हैं। इन यात्राओं ने उन्हें न केवल अनुभव संपन्न बनाया है बल्कि ऊर्जा संपन्न भी बनाया है। यह संस्मरण पढ़ते हुए पाठक इस संपन्नता को भली-भाँति महसूस कर सकते हैं। विजय सन्देश ने इन संस्मरणों में भौगोलिक सुन्दरता को तो नजर भर सहेजा ही है, उन जगहों के इतिहास और संस्कृति को भी जिया है और उस जिए हुए क्षण को अल्फाज दिये हैं। पर्यावरण के प्रति लेखक का जुड़ाव और लगाव इन संस्मरणों में सहज ही देखा जा सकता है।

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner



'उड़ता चल हारिल' पुस्तक का हर यात्रावृत्त अपने तरीके से विशिष्ट ही है। पुस्तक का पहला यात्रावृत्त 'कोहरे की चादर में लिपटी चाँदनी' हिमाचल प्रदेश की यात्रा पर आधारित है। हिमाचल प्रदेश की प्राकृतिक सुषमा का वर्णन करने के साथ-साथ धर्मशाला और डलहौजी की संस्कृति का सुन्दर वर्णन किया गया है। इस भू-भाग के सांस्कृतिक महत्त्व के साथ-साथ धार्मिक महत्त्व को भी लेखक ने वर्णित किया है। दूसरे यात्रावृत्त 'हिमाच्छादित उत्तुंग शिखर और धुली हरियाली' में कश्मीर यात्रा के मनोहर संस्मरण हैं। तीसरे यात्रावृत्त 'मेरी अंडमान यात्रा : क्रांतिकारी शहीदों की शरणस्थली और ज्वार-भाटों की लोल-लहरियाँ' में लेखक ने पोर्टब्लेयर, हैवलॉक आदि के ऐतिहासिक और जनजातीय महत्त्व को रेखांकित किया है। चौथा यात्रावृत्त 'अजंता-एलोरा : संगतराशी की दुनिया में एक विशिष्ट नाम' लेखक की अजंता-एलोरा यात्रा का वर्णन है जिसमें महाराष्ट्र की प्राकृतिक सुषमा के साथ-साथ अजंता-एलोरा के स्थापत्य के महत्त्व और इतिहास की गहरी जानकारी है। झारखंड के प्राकृतिक परिवेश पर आधारित पुस्तक का पाँचवाँ संस्मरण 'झारखंड : जहाँ ईको पर्यटन की अपरिमित संभावनाएँ हैं' भी इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है कि इसमें लेखक ने झारखंड में पर्यटन संभावनाओं का अच्छा विश्लेषण किया है। भारत की दक्षिणी सीमा पर स्थित राज्य केरल पर आधारित 'समुद्र की आघातिक लहरें और लहलहाते नारिकेल' में केरल की सौन्दर्य विशिष्टताओं का सुन्दर चित्रण है।

पुस्तक के दूसरे भाग में मॉरीशस यात्रा पर आधारित 'गिरमिटियों के देश में आठ दिन', आबू धाबी और दुबई की यात्रा पर आधारित 'रेत पर लिखा समृद्धि का स्वप्नलोक', रूस यात्रा पर आधारित 'आधी रात को भी दिखता है सूरज, श्रीलंका की यात्रा पर आधारित 'प्राचीन भारतीय बौद्ध संस्कृति और हिन्दी', ऑस्ट्रेलिया यात्रा पर आधारित 'समृद्ध प्रकृति, पर्यटन-स्थल और हिन्दी', यूरोप-यात्रा पर आधारित 'डेन्यूब का जादू और आकाश चूमते आल्प्स शिखर' और अन्तिम भूटान यात्रा पर आधारित 'बुद्ध के विचार जहाँ जीवन का अहम हिस्सा हैं' आदि यात्रावृत्त संग्रहीत हैं। लेखक की शैली के अनुरूप यह सभी संस्मरण उन देशों की प्राकृतिक सुषमा के साथ-साथ वहाँ के इतिहास, संस्कृति आदि का मूल्यवान चित्रण करते हैं। श्रीलंका यात्रा पर आधारित संस्मरण में भारत की प्राचीन संस्कृति और श्रीलंका के सन्दर्भों को लेखक ने शोधपरक दृष्टि से विश्लेषित किया है। इस दृष्टि से यह यात्रावृत्त भाग-दो के संस्मरणों में सबसे विशिष्ट बन गया है। पुस्तक के प्रत्येक भाग के अन्त में यात्राओं से सम्बन्धित छाया चित्र पुस्तक के सौन्दर्य के साथ-साथ उसकी उपयोगिता को बढ़ाते हैं। कुल मिलाकर यह हिन्दी का एक संग्रहणीय यात्रावृत्त है।

डॉ. विजय कुमार 'सन्देश' की यही खूबी है कि विविध प्राकृतिक दृश्यों और वातावरण के छोटे-छोटे खंडों में बाँटते हुए परिवेश को समझाते-समझाते कब आगे बढ़

जाते हैं, पता ही नहीं चलता है। उनके प्राय: सभी यात्रावृत्तों में स्पष्टता और सहजता है। उन्होंने देश-विदेश की काफी यात्राएँ की है और जहाँ भी गये वहाँ की भाषा, संस्कृति, समाज और इतिहास के साथ-साथ पर्यावरण का आकलन भी अपनी लेखनी से किया है। 'गिरमिटियों के देश में आठ दिन', 'आधी रात को भी दिखता है सूरज' आदि उनके स्मरणीय यात्रा-वृत्तांत हैं। डॉ. विजय कुमार 'सन्देश' के यात्रा-साहित्य में व्यक्तियों, वस्तुओं और स्थितियों के साथ-साथ लेखक के अन्तर जगत का साक्षात्कार परिलक्षित होता है, इसीलिए अभिन्न मित्र डॉ. विजय कुमार 'सन्देश' जैसे मित्रों की लेखनी से हिन्दी में यात्रा-साहित्य निश्चित ही और समृद्ध होगा इन्हीं अपार संभावनाओं के साथ उन्हें हृदय से साधुवाद देता हूँ। 'उड़ता चल हारिल' उनके यात्रा-साहित्य का मनमोहक पिटारा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह 'हारिल' नित-नूतन अनुभवों से सदैव साहित्य प्रेमियों का साक्षात्कार करवाता रहेगा।

## सन्दर्भ

1. सिंह, अनिल, काव्य सौरभ, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2021
2. जागरण, हजारीबाग, 17 नवम्बर, 2020

Scanned with OKEN Scanner

# प्राचीन भारतीय इतिहास संशोधनात 'संशोधक' त्रैमासिकाची भूमिका

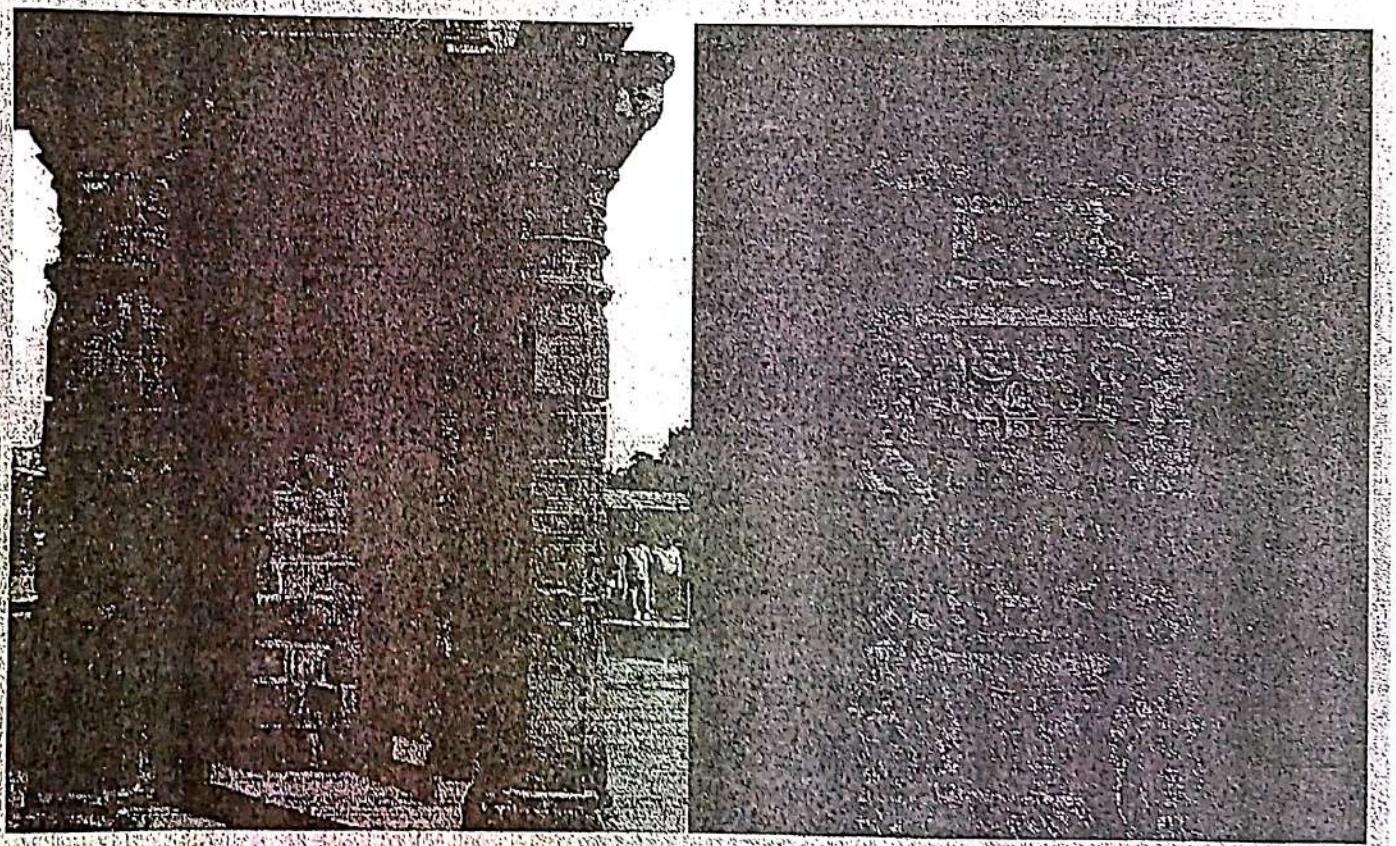

डॉ. गौतम गोविंद सोनवणे

# प्राचीन भारतीय इतिहास संशोधनात 'संशोधक' त्रैमासिकाची भूमिका

लेखक
**डॉ. गौतम गोविंद सोनवणे**
(एम.ए., नेट, पीएचडी)
सहयोगी प्राध्यापक व प्रमुख, इतिहास विभाग
सोनुभाऊ बसवंत कला व वाणिज्य महाविद्यालय, शहापूर, जि. ठाणे

न्यू मॅन पब्लिकेशन
www.newmanpublication.com

ISBN: 978-81-963937-9-3

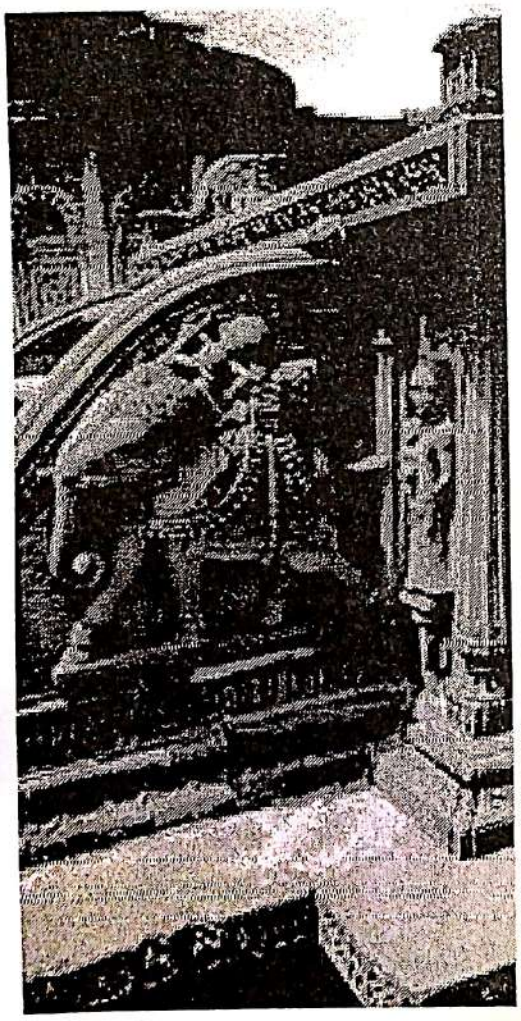

प्राचीन भारतीय इतिहास संशोधनात 'संशोधक' त्रैमासिकाची भूमिका

- डॉ. गौतम गोविंद सोनवणे

प्रथम आवृत्ती: ऑगस्ट २०२३

© डॉ. गौतम गोविंद सोनवणे

प्रकाशक:
डॉ.कल्याण गांगर्डे
न्यू मेंन पब्लिकेशन परभणी / गुंबई
मो. ८३२९०००७३२

मुद्रक:
स्नेहल प्रिंटर्स, परभणी
मो. ९७३०७२१३९३

टाइपसेटिंग: सीमा गांगर्डे

मुखपृष्ठ: डॉ.कल्याण गांगर्डे

किंमत: ₹ ३००/-

या पुस्तकातील मजकुराशी प्रकाशक सहमत असतीलच असे नाही. सदर पुस्तकाच्या आतील मजकूर कॉपी करणे अथवा इतरत्र वापरणे हा कायदेशीर गुन्हा आहे.

# अनुक्रमणिका


| प्रकरण क्रमांक | प्रकरणाचे नाव | पृष्ठ क्रमांक |
|---|---|---|
| प्रकरण पहिले | पार्श्वभूमी | ८ |
| प्रकरण दुसरे | शिलालेख | १५ |
| प्रकरण तिसरे | ताम्रपट | ३३ |
| प्रकरण चौथे | धार्मिक आणि लौकिक वास्तू | ४५ |
| प्रकरण पाचवे | मूर्तीकला | ७४ |
| प्रकरण सहावे | भारतीय इतिहास आणि संस्कृती | ९२ |
| • | संदर्भ ग्रंथ सूची | १४९ |

# प्राचीन भारताचा इतिहास

## अश्मयुग ते धम्मयुग

डॉ. गौतम गोविंद सोनवणे

# प्राचीन भारताचा इतिहास:

## अश्मयुग ते धातूयुग

लेखक

**डॉ. गौतम गोविंद सोनवणे**

(एम.ए., नेट, पीएचडी)

सहयोगी प्राध्यापक व प्रमुख, इतिहास विभाग

सोनुभाऊ बसवंत कला व वाणिज्य महाविद्यालय, शहापूर, जि. ठाणे

न्यू मॅन पब्लिकेशन

www.newmanpublication.com

ISBN: 978-81-963937-7-9

प्राचीन भारताचा इतिहास: अश्मयुग ते धातूयुग
- डॉ. गौतम गोविंद सोनवणे

प्रथम आवृत्ती: ऑगस्ट २०२३

© डॉ. गौतम गोविंद सोनवणे

**प्रकाशक:**
डॉ.कल्याण गांगर्डे
न्यू मॅन पब्लिकेशन परभणी / मुंबई
मो. ८३२९०००७३२

**मुद्रक:**
स्नेहल प्रिंटर्स, परभणी
मो. ९७३०७२१३९३

**टाइपसेटिंग:** सीमा गांगर्डे

**मुखपृष्ठ:** डॉ.कल्याण गांगर्डे

**किंमत:** ₹ २००/-

या पुस्तकातील मजकुराशी प्रकाशक सहमत असतीलच असे नाही. सदर पुस्तकाच्या आतील मजकूर कॉपी करणे अथवा इतरत्र वापरणे हा कायदेशीर गुन्हा आहे.

# अनुक्रमणिका


| | |
|---|---|
| प्रकरण 1 - भारतीय संस्कृतीचा उदय | 9 |
| प्रकरण 2 - भारतीय संस्कृतीचे पुरातत्वीय विश्लेषण | 19 |
| प्रकरण 3 - भौगोलिक परिस्थिती | 29 |
| प्रकरण 4 - अश्मयुगीन संस्कृती | 35 |
| प्रकरण 5 - ताम्रपाषाणयुगीन कृषि संस्कृती | 46 |
| प्रकरण 6 - ताम्रपाषाण कालीन इतर संस्कृती | 52 |
| प्रकरण 7 - सिंधु संस्कृती | 58 |
| प्रकरण 8 - वैदिक संस्कृती | 78 |
| प्रकरण 9 - लोहयुगीन संस्कृती | 97 |
| प्रकरण 10 - महापाषाण संस्कृती | 100 |
| प्रकरण 11 - भारतीय संस्कृतीचा आशियात झालेला प्रसार | 104 |

**Dr. Shirish N. Gawali**
M.Com., M.Phil., Ph.D.
Rayat Shikshan Sanstha's
Chandraroop Dakale jain College of Commerce,
Shrirampur Dist. Ahmednagar (M.S.) India.

Dr. Shirish Nana Gawali is the Associate Professor in Commerce in Rayat Shikshan Sanstha's Chandraroop Dakale Jain College of Commerce Shrirampur Dist. Ahmednagar (MS) India. He is the Head of the Department of Business Practices. He is the author and co-author of the number of books on Business Management, Business Organization, Business Administration and Auditing. He is the M.Phil and Ph.D. Guide for Business Administration. Business Practices and Human Resource Management in Pune University. He is the winner of "Prof.G.B. Kulkarni Award for the Best Teacher in Commerce" for his outstanding performance in teaching and other activities by Pune University and he is also awarded "Bar. P.G. Patil Best Teacher Award sponsored by Prin.M,M. Swami" through Rayat Shikshan Sanstha, Satara member of Board of studies of Business Practices and member of Commerce faculty in Pune University for the period of 2000-2005, 2005-2010 and 2010-2015. He has presented and published number of research papers on State, National and International level conferences. He is working as Major Rank for N.C.C. He is a very popular teacher among the students and staff.

ज्योतीचंद्र
पब्लिकेशन प्रा.लि. लातूर

ISBN 978-81-924894-8-3

Banking amd Finance Sector

Dr. Shirish N. Gawali

# Banking & Finance Sector

Dr. Shirish N. Gawali

# Banking & Finance Sector

**Dr. Shirish N. Gawali**

**Associate Professor,**
**Chandraroop Dakale Jain College of Commerce,**
**Shrirampur, Dist. Ahmednagar (M.S.) India**

**Jyotichandra Publication**

**ISBN : 978-81-924894-8-3**

- **Banking & Finance Sector**

  **Dr. Shirish N. Gawali**

© The Author

- **Publisher**
  **Jyotichandra Publication**
  LIC Colony, Latur.
  Tq. & Dist. Latur - 413 531

- **Type Setting :**
  Vikas Dhamale

- **Cover Page:**
  Vikas Dhamale

- **Printer :**
  **Jyotichandra Offset Printing & Binding**
  LIC Colony, Latur. - 415331

- **First Edition : 4 December 2023**

---

**Note :** All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed or transmitted in any form or by any means, including photocopying, recording, or other electronic or mechanical methods, without the written permission of the publisher and the Author.

# INDEX


| Sr. No | Chapter | Page No. |
|---|---|---|
| 1 | Problems and Prospects of Indian Banking<br>**Manish R. Gupta** | 1 |
| 2 | Globalization of Indian Banking Sector : Issues and Challenges<br>**Prof. Pratima Singh** | 9 |
| 3 | Banks in India: Challenges & Opportunities<br>**Dr. Jaydeo P. Deshmukh** | 19 |
| 4 | Retail Banking in India : An Overview<br>**Dr. Atmaram Palnitkar** | 34 |
| 5 | Performance of District Central Co operative Banks in Maharashtra<br>**Dr. Agale Sudhir Vasantrao** | 46 |
| 6 | The Emerging Role of Banks in E-Commerce<br>**Prof.Ashwini Kulkarni** | 53 |
| 7 | Changes in Indian Banking System and Adopting Technology<br>**Dr. Shirish N. Gawali** | 62 |
| 8 | Development in Banking & Insurance sector<br>**Dr. Shrikant L. Patil** | 66 |
| 9 | Changing the Roles of Banking Sectors through Various Skill and Technologies<br>**Dr. Santosh Subhash Budhwant** | 74 |
| 10 | Virtual Money : Feel the Magic of aspect banking technology<br>**Dr. Ganesh Narayanrao Bokare** | 81 |

| | | |
|---|---|---|
| 11 | Financial Reforms In Banking Sector And Its Impact On The Consumers<br>**Dr. Rita Khatri** | 86 |
| 12 | Role of FDI in Banking, in generating wealth to Indian Economy<br>**Prof. Roma Pritamdas Bhagtiani** | 95 |
| 13 | E-Banking- Pros and Cons<br>**Dr. Eknath J. Helge** | 101 |
| 14 | Changing Market Structure in Banking Industry : the Indian Experience<br>**Dr. Rajesh Chandak, Dr Sahebrao Chavan** | 113 |
| 15 | The Global Recession & Banking System<br>**Dr. Pradeep S. Jadhav** | 123 |
| 16 | Impact of Reforms on Indian Banking Industry<br>**Ms. Salochna Nagdev** | 128 |

This document was created with the Win2PDF “Print to PDF” printer available at

https://www.win2pdf.com

This version of Win2PDF 10 is for evaluation and non-commercial use only.
Visit https://www.win2pdf.com/trial/ for a 30 day trial license.

This page will not be added after purchasing Win2PDF.

https://www.win2pdf.com/purchase/

# Chapter 9
# Changing the Roles of Banking Sectors through Various Skill and Technologies

**Dr. Santosh Subhash Budhwant**
*Assistant Professor,*
*Sonubhau Baswant College of Arts and Commerce,*
*Shahapur, Dist. Thane*

## Introduction

The new financial year in India has seen a fuel growth in the banking sector with the development of innovations. Today Indian banking Sector is a flourishing Industry; it's mainly focused on new Banking technological innovations. Banks created to use technology to provide effective and qualitative services to the customer and get high speed. In the recent scenario has been changed, there are more than 300 banks are working in India, in which are public and private banks and as well as foreign banks. Today all the banks started with the different channels, like ATM, Credit Cards, Debit Cards, Mobile Banking, Internet Banking, Electronic Clearing Service (ECS) in 1990's, EFT, RTGS, NEF etc. But Net Banking made it an easy way for customers to do their banking transaction from various places. The Indian Banking System cannot ignore the new technological challenges and banks are also facing great challenges, that the innovations policy and strategy. This paper examines with all the innovations and new technological changes in the banking sector. Nowadays the Indian banking sector has seen number changes. Most of the Banks began to take an innovative challenge towards banking with the objectives and consequently to the banks. The financial innovation in development and design the implementation of innovative financial process. the financial year innovative banking sector are using Internet Banking, Mobile Banking, Debit Card, Credit Card, Automatic teller machine, Fund Transfer, RTGS, NEFT, EFT, ECS, Advisory

Services, Payment Utility bills, fund Transfer, Insurance Schemes, Cheque Books, Travel Cheques and value added services. Today's digital age and hyper-connected environment requires banks to re-imagine their business continuously. The year 2017 will be no different for the Indian banking sector; there will be growth fueled by innovative initiatives such as Unified Payments Interface (UPI) and technology.

Keywords: Introduction of Indian Banking Sector, Objectives, Hypothesis, Challenges of Banking, New Technological Changes, Product and Services.

**Objectives**

1. To provide excellence and fast qualitative service to consumer
2. To increase Banking development.
3. To provide liquidity and safety of funds.
4. To work easy with less time consume.
5. To increase empowering of employees.

**Hypothesis**

1. New technology are various innovative.
2. New technology are used by all commercial Banks.
3. Banks are providing Safety to consumers by all new technology.

**Various new technology in Indian Banking sector**

**1. Open banking is the new normal**

Open banking—a connected ecosystem for financial and non-financial services with multiple underlying service providers—is the future of banking.

**2. Banking on the cloud first strategy**

Progressive banks are already making strides in cloud adoption. Disruptive technologies that are changing the face of business—Big Data, block chain, artificial intelligence (AI), IoT— will be leveraged using cloud computing. Indian banks are coming around to the idea that the business agility provided by cloud outweighs the concerns. Business models for emerging banks and fintechs will also be largely driven by the cloud-first strategy.

Demonetization is pushing India towards a cashless society, and as banks prepare to deal with the increased influx of electronic transactions, cloud will provide banks with the required elasticity to meet these demands.

**3. Block chain and the race to production**

As banks try to become more efficient and agile to meet the increasing demands of customers, block chain will be one of the enablers for re-imagining processes. In 2017, banks will increasingly move some projects from pilot to production and leverage block chain to automate inter-organizational processes. The recent Emirates NBD and ICICI Bank partnership to launch a block chain pilot network for international remittances and trade finance is a precursor for advances in this technology.

**4. Artificial Intelligence**

Artificial Intelligence- has the potential to transform both front office and back office operations with its self-improving programs—at ICICI Bank. The banks will explore the concepts to integrate the conversational interface into their Omni channel strategy.

**5. More things to bank**

The year 2016 was the year of mobile-first strategy. Indian banks leveraged the increasing adoption of mobile to provide customized offerings on their apps.

**6. Banking architecture simplification-**

All of these overlying technologies will be built on the bedrock of banking architectural simplification. The New Year will see banks move to componentization instead of the traditional monolithic architecture. In other words, complex architecture will be broken up into smaller bite-sized pieces for ease of deployment and upgrade for specific functionalities. Componentization will not only increase agility to modernize selectively to keep pace with current technology trends, but also allow for risk-mitigation of projects. Banks will simplify architecture by implementing enterprise-class applications, which will be able to deliver capabilities required across business units and

eliminate silos that currently exist.

With initiatives like demonetization, the Indian government has made it clear that India will be yanked away from a cash-based economy. GST rollout will give further impetus to the Indian economy. In 2017, banks will not only have to keep up with the growing expectations of a billion connected customers, but they'll also have to make sure that they are leagues ahead of the emerging competition. (Source: http://www.huffingtonpost.in & www.researchgate.net)

**Recent Trends in Banking**

The Indian banking business has changed dramatically over the past 25 years, due in large part to technological change. The various factors of innovations in banking and financial market are ECS, RTGS, NEFT, ATM, and Retail Banking. Etc., and including more product and services.

**1. The automated teller machine or ATM**, is such a complicated piece of technology that it does not have a single inventor. Today we use ATM are an amalgam of several different inventions. Automatic Teller Machine enables the customers to withdraw their money 24 hours a day 7 days a week. ATMs can be used for cash withdrawal, payment of utility bills, funds transfer between accounts, deposit of cheques and cash into accounts, balance enquiry etc.

**2. Electronic Payment Services**

- It is mainly based on the e-governance, e-mail, e-commerce, e-tail etc.
- EPS Being developed in US for introduction of e-cheque
- Negotiable Instruments Act

**3. Real Time Gross Settlement (RTGS)**

- Introduced in India Since March 2004
- Operated by RBI
- Transfer Funds from their account to the account of another bank
- Fast Funds transfer (2 hours)

**4. NEFT**

- Nationwide payment system
- One to one Fund Transfer

**5. Electronic Funds Transfer -**

Electronic is a system whereby anyone who wants to make payment to another person/company etc. Details - receiver's name, bank account number, account type (savings or current account), bank name, city, branch name etc. RBI is the service provider of EFT.

**6. Point of Sale Terminal**

- Linked online to the computerized customer information files in a bank
- Plastic transaction card
- customer's account is debited and the retailer's account is credited

**7. Tele Banking**

- Entire non-cash related banking on telephone
- Automatic Voice Recorder
- Manned phone terminals are used

**8. Electronic Data Interchange (EDI)**

The electronic exchange of business documents like purchase order, invoices, shipping notices, receiving advices etc. in a standard, computer processed, universally accepted format between trading partners.

**9. Customer management-** Banks need to clearly articulate and measure the expected benefits from the winning strategies which would be dependent on the value various initiatives provide customers. These include:

- Customer segmentation
- Co-creation
- CRM to customer experience
- Use of alternative channels
- Effective cross and upsell

**10. Risk management and information security**

- Risk management methods include:
- Credit systems
- Enterprise Risk Management Systems
- Liquidity risk systems

**11. Technology in training and e-learning**

- ERA of liberalization and reforms in the country
- Increase in investment on training and development by banks in India

**New technology**

- Adoption
- Productivity
- Responding to skills deficiencies
- Staff performance management (Source: http://www.ey.com)

**12. Mobile banking** - Mobile banking is a service provided by a bank or other financial institution that allows its customers to conduct financial transactions remotely using a mobile device such as a smartphone or tablet.

**13. Core Banking** - Core banking is a banking service provided by a group of networked

**14. Corporate Banking –** Corporate banking, also known as business banking, refers to the aspect of banking that deals with corporate customers Services

- Overdraft
- Domestic & International Payment
- Funding
- Channel Financing
- Letters of Guarantee
- Working Capital Facilities
- International Trade

**15. Investment Banking-** Mainly two ways of fund creating Corporate Finance & M& As

**16. Smart Card**

- Chip Based Card

- Pin
- Powerful Cards like ATM, Credit Card, Debit Card

**Product and Services of Innovative Banking**

1. Bank Automation 1) Speed Up 2) Friendly and Flexibility 3) Towards Less transactions. 2. Banking Branches 3. Cash Withdrawal 4. Cash Deposit 5. Account Statement 6. Cheques 7. Fund transfer 8. Balance Enquiry 9. Purchase of Demand 10. Draft Pay Order 11. Repayment of Loan Account 12. Demat Services – Provide online trading facility 13. Microfinance- Income Producing Activities, Build Assets, Stabilize Consumption 14. Plastic Money-it is alternative to cash and convenient to carry 15. Mobile banking-Balance Enquiry, Fund Transfer

**Reference**

1. Aruna R.Shet (2015), Assistant Professor, Zew Horizon College, International Journal of Scientific Engineering and Research (IJSER), ISSN (online):2347-3878, Impact Factor 92015):3.79.
2. Sandeep Kaur (2015): ½A Study on New Innovation in Banking sector" ISSN; 2319- 7064, IJSR, IF:6.39
3. Ms.Charu Modi, Assistant Professor Jeeva Sewa Sansthan Group of Institutions for Women Faculty of Management Bhopal,½Innovative in Indian Banking Sector" – Use of Technology.
4. Mr. Birenjan Diga, Faculty Department of Mangement Studies, AI-Amen Institute of Management Studies, Bangalore, 'Technology Change & Financial Innovation in Banking".

**Websites**

- http://www.icmrindia.org
- http://www.cxotoday.com
- http://www.ey.com
- https://www.slideshare.net
- https://link.springer.com
- www.ijsrm.in

This document was created with the Win2PDF “Print to PDF” printer available at

https://www.win2pdf.com

This version of Win2PDF 10 is for evaluation and non-commercial use only.
Visit https://www.win2pdf.com/trial/ for a 30 day trial license.

This page will not be added after purchasing Win2PDF.

https://www.win2pdf.com/purchase/

पुस्तक परीक्षण

# पोश्यांपोर : आदिवासी तरुणाची संघर्षगाथा

- संजय निचिते

पोश्यांपोर
डॉ. राजू शनवार
प्रकाशक : शब्दालय प्रकाशन, श्रीरामपूर
प्रथम आवृत्ती : २०२३
पृष्ठे : २०५
मूल्य : रू. ३८०/-

*पोश्यांपोर* हे डॉ. राजू शनवार यांचे मार्च २०२४मध्ये शब्दालय प्रकाशनाने प्रकाशित केलेले आत्मकथन आहे. जव्हारच्या आदिवासी वारली समाजातील तरुणाने लिहिलेले हे पहिलेच आत्मकथन असावे. त्यामुळे या आत्मकथनाला सामाजिक व सांस्कृतिकदृष्ट्या महत्त्व प्राप्त होते.

*पोश्यांपोर* हे आत्मकथन म्हणजे बापाविना वाढलेल्या मुलाची, त्याच्या आईची, खरंतर सगळ्या कुटुंबाचीच संघर्षगाथा आहे. जव्हारच्या ग्रामीण भागात वडिलांविना वाढलेल्या मुलासाठी 'पोश्या' हे शिवीसदृश्य संबोधन वापरले जाते. राजू शनवार यांची लहानपणी आबालवृद्धांकडून 'पोश्या' शब्दांत हेटाळणी केली जात असे. नात्यातल्या-शेजारच्या माणसांकडून सतत अपमानास्पद वागणूक मिळूनही डॉ. राजू शनवार त्याविषयी कुठेही कुरकुर करत नाहीत वा त्याविषयी तक्रारींचा पाढाही वाचत नाहीत.

जव्हारच्या आदिवासी वारली कुटुंबात झालेला जन्म, प्रतिकूल शैक्षणिक वातावरण, घरात अठराविश्वे दारिद्र्य ह्या सगळ्या कारणांमुळे सुरुवातीला राजूची वर्गातील प्रगती

सामान्य होती. अशा अवतीभवतीच्या अशैक्षणिक वातावरणात एका वर्गातून दुसऱ्या वर्गात जाणे हेच मोठे आव्हान होते. राजूच्या अनेक सवंगड्यांना हे आव्हान पेलवले नाही. राजूने मात्र हिमतीने शिक्षण घेतले. प्रारंभी कौटुंबिक गरज ओळखून दहावीनंतर डी.एड. करून प्राथमिक शिक्षकाची नोकरी मिळवली. परिस्थितीच्या कचाट्यात गटांगळ्या खाणाऱ्या कुटुंबाला राजूच्या नोकरीमुळे स्थैर्य प्राप्त झाले. शिक्षणाचा दंश झालेला माणूस आजन्म विद्यार्थी राहणे पसंत करतो. या उक्तीप्रमाणे राजू शिक्षणाला पूर्णविराम न देता पुढचे शिक्षण घेत राहिला. जव्हार महाविद्यालयातून पदवीचे शिक्षण उत्तम गुणांनी उत्तीर्ण झाला. प्राथमिक शिक्षक म्हणून नोकरी करत असतानाच मुंबई विद्यापीठाच्या दूरस्थ शिक्षण विभागातून एम.ए.चे शिक्षण पूर्ण केले. त्यासाठी त्याला तारेवरची कसरत करावी लागली. यथावकाश प्राध्यापक पदासाठी आवश्यक असलेली 'सेट' परीक्षाही तो उत्तीर्ण झाला. २००७ साली ठाणे जिल्ह्यातील शहापूरच्या सोनुभाऊ बसवंत महाविद्यालयात सहायक प्राध्यापक म्हणून रूजू झाला. एका अस्थिर कुटुंबातील मुलाने परिस्थितीशी कधी जुळवून घेत, तर कधी संघर्ष करत प्राध्यापक पदापर्यंत केलेला हा प्रवास अनेक अर्थांनी महत्त्वपूर्ण ठरतो. दुसऱ्याच्या आधाराने वाढलेल्या, रोजगार हमी योजनेअंतर्गत काम करणाऱ्या, दुसऱ्याच्या शेतात मजुरी करणाऱ्या मुलाने प्राध्यापक होणे ही बाब सामान्य नाही. डॉ. राजू शनवार यांचा हा शैक्षणिक प्रवास म्हणजे प्रतिकूलतेवर प्रयत्नाने, निश्चयाने केलेली मात आहे, असे म्हणता येईल.

वडील सरकारी नोकरीत असूनही व्यसनाच्या अधीन गेल्याने वडिलांचे छत्र त्यांना लाभले नाही. फसवणुकीचा बळी झालेल्या आईला पोटात गर्भ असतानाच नवऱ्याचे घरदार सोडावे लागते. कडेवर एक मुलगी आणि पोटात गर्भ घेऊन घराबाहेर पडलेल्या स्त्रीसाठी जगणे कुठल्याही अर्थाने सुसह्य नसते. पावलोपावली अग्निपरीक्षा द्यावी लागते. ह्या परीक्षेस आई - पार्वती मोठ्या धाडसाने आणि संयमाने सामोरी गेलेली दिसते. भारतीय समाजव्यवस्थेतील स्त्री-पुरुष विषमतेचा एक अध्यायच यानिमित्ताने पुढे येतो. आईच्या ह्या प्रवासात आजी- आया आणि मामा- प्रभाकर यांनी दिलेली साथही मोलाची आहे. त्यांच्याविषयीची कृतज्ञता म्हणूनच डॉ. राजू शनवार यांनी *पोश्यांपोर* हे आत्मकथन मामा- प्रभाकर खरपडे आणि आजी- गिरिजाबाई खरपडे यांना समर्पित केलेले दिसते.

आत्मचरित्र हे व्यक्तिनिष्ठ असते तर आत्मकथन हे समूहनिष्ठ असते, असे दलित आत्मकथनांबद्दल म्हटले जाते. *पोश्यांपोर* या आत्मकथनातूनही समूहमनाचा आविष्कार होतो. अभावग्रस्त जीवन जगणाऱ्या, परिस्थितीच्या पाशात अडकलेल्या आदिवासी वारली समाजातील कितीतरी राजूंची ही प्रातिनिधिक जीवनगाथा म्हणावी लागेल.

दारिद्र्य, व्यसनाधीनता, अज्ञान, अंधश्रद्धा, उपासमार, बेरोजगारी यांचा परंपरागत शापच आदिवासी समाजाला मिळालेला आहे. वर्षानुवर्षे या गर्तेत अडकलेल्या समाजाची स्वातंत्र्यानंतरही सुटका झालेली नाही. *पोश्यांपोर*मध्ये त्याचे भेदक दर्शन घडते. याचबरोबर या आत्मकथनात आदिवासी वारली समाजाच्या सण-उत्सव साजरे करण्याच्या पद्धती, परंपरा, रीती-भाती, देव-देवता यांचेही चित्रण आले आहे. वारली समाजाच्या काही रूढी-परंपरा आहेत. त्यांचे जगणेच निसर्गचक्रावर अवलंबून असते. पावसाळ्यातील पहिला कवळेभाजीचा सण तर दुसरा खादीचा देव. हे दोन्ही सण मंगळवारीच साजरे केले जातात. त्यापाठोपाठ येणारा सण म्हणजे पोळा. परंतु दारिद्र्यात जगणाऱ्या वारली समाजाकडे त्याकाळी बैल नसत. कोकणा समाज हा सण साजरा करत असे. वारली समाज दुरून त्याचा आनंद घेत असे. बोहाडा, तारपा लोकनृत्ये वारली समाजाच्या समूहभावनेची निदर्शक आहेत. सण-उत्सवप्रसंगी गायल्या जाणाऱ्या लोकगीतांचेही अनेक संदर्भ *पोश्यांपोर*मध्ये आले आहेत. तारपा नृत्यावेळी गायली जाणारी गीते आदिवासी समाजसंस्कृतीच्या संपन्नतेची ग्वाही देतात.

निसर्गाच्या कुशीत वाढणारा वारली समाज प्रचंड मेहनती आहे. मात्र अजूनही मूलभूत गरजांचा प्रश्न निकालात निघाला नसल्याची खंत लेखक व्यक्त करतो. राजूची आजी आणि आई या दोघीही प्रचंड कष्ट करतात. मात्र तरीही कुटुंबातील सदस्यांना तीन वेळचे अन्न मिळत नाही. मुलांच्या शिक्षणाचा खर्च परवडत नाही म्हणून मुलांना आश्रमशाळेत घातले जाते. राजूचे संपूर्ण शालेय शिक्षणच आश्रमशाळेत होते. आजही वारली समाजाच्या आर्थिक स्थितीत फार फरक पडला आहे असे नाही. लेखकाने ध्येयाने शिक्षण घेतले म्हणून त्या सगळ्या जाचातून त्याची सुटका झाली. मात्र ज्यांनी शिक्षण घेतले नाही अशा तरुणांची, त्यांच्या कुटुंबांची परवड सुरूच आहे.

राजूने त्याचे शालेय शिक्षण आश्रमशाळेत पूर्ण केले. आश्रमशाळेमुळे कितीतरी मुलांचे शिक्षण झाले. त्यांना नोकरी प्राप्त झाली. पर्यायाने त्यांची कुटुंबे सुस्थितीत जगत आहेत. जवळपास शाळा नसलेल्या व घरची आर्थिक स्थिती बरी नसलेल्या मुलांसाठी आश्रमशाळा हे वरदान ठरले. आश्रमशाळेमुळेच आपले शिक्षण झाले याबद्दल लेखकाच्या मनात आश्रमशाळेबद्दल आदराचीच भावना आहे. मात्र आश्रमशाळेतील अनागोंदी कारभार, शिक्षकांची मुलांकडून घरकाम करवून घेण्याची मानसिकता, सत्त्वहीन व पोटभर जेवणाचा अभाव याविषयी लेखकाने संयत शब्दांत संताप व्यक्त केला आहे. विनवळ आश्रमशाळेतील दिवसांबाबत लेखक लिहितो, "आश्रमात कायमाहेत कधी माझी भूक गेलीच नाय. उन्हाळेत बरंच मोठं दिवस. सकाळी दहा वाजता जेवून झाला का संध्याकाळचे

सहा वाजता जेवण. पाच वाजता साळा सुटली की बरीच भूक लागं. त्या यळचे रोज स्वयंपाक घराचे तिकडं मी टुकण्या लावत होतु. तिकडं मुद्दाम हिंडा जाय. स्वयंपाकी तूरडाळ, कधी मूगडाळ अशा डाळी पहल्या शिजवून घेत. डाळ पूर्ण शिजली मा मस्त जीरा, मोहरी, लसूण,टाकून फोडणीलं देत. जी डाळ फोडणीलं देत ती फक्त अर्धा पातेलात रहत होती. तठलं सगळं स्वयंपाकी भात घेत अन तेवर ती घट्ट घट्ट तेलाची तरंजीवाली डाळ टाकत. तेवर भाजी घेत.... अर्धा पातेला डाळीलं फोडणी दियेल तेहेत पाणी टाकून दोन पातेली डाळ चुलीवर उकळवत ठेवत. त्या पिवळापाणी आम्हालं जेवणावर देत." (पृ. ५९) आश्रमशाळेतील अशा गैरव्यवहारांमुळे मुलांच्या आरोग्याबरोबरच शिक्षणावरही परिणाम होतो आहे याकडे लेखक लक्ष वेधतो.

मराठीतील सुप्रसिद्ध लेखक रंगनाथ पठारे यांनी *पोश्यांपोर* या आत्मकथनाची पाठराखण केली आहे. ते म्हणतात, "*पोश्यांपोर* हे राजू शनवार यांचे आत्मकथन अनेक अंगांनी लक्षणीय आणि महत्त्वाचे आहे. ते एक महत्त्वाचा सामाजिक आणि सांस्कृतिक दस्तऐवज तर आहेच, खेरीज त्यात वापरली गेलेली जव्हारच्या परिसरात बोलली जाणारी बोलीही याआधी मराठी साहित्यात क्वचितच अवतरली असेल. कोकणा, वारली, ठाकर, महादेव कोळी, मल्हार कोळी, कातकरी अशा अनेक आदिवासी लोकांची भाषा, त्यांच्यातले परस्परसंबंध, चालीरिती, जगण्यातला संघर्ष आणि त्यासंबंधी तक्रार न करण्यातली असमंजस सोशिकता या गुणांनी हे लेखन ओतप्रोत भरलेले आहे."

निवेदनातील प्रांजळपणा हे *पोश्यांपोर* या आत्मकथनाचे महत्त्वाचे वैशिष्ट्य म्हणावे लागेल. बऱ्याचदा आत्मकथन लिहिणाऱ्या व्यक्तीस आत्मस्तुतीचा मोह टाळता येत नाही. डॉ. राजू शनवार मात्र आपल्या वाट्याला आलेले जीवनविश्व स्वच्छपणे मांडतात. त्यात काही आनंदाचे क्षण आहेत तर काही दु:खाचे, अपमानाचे, फजितीचे, आघाताचे, हिणवण्याचे, अगतिकतेचे! डॉ. राजू शनवार यांनी आपल्या मनोगतात म्हटले आहे की, "माझे हे आत्मकथन म्हणजे काही असामान्य यश मिळविलेल्या व्यक्तीची कथा नाही. एका सामान्य पोरक्या आदिवासी विद्यार्थ्याची ही सामान्य कथा आहे. कोणतेही दैदिप्यमान यश मिळविलेले सर्वांना सांगणे किंवा इतरांसाठी प्रेरणास्त्रोत होणे असा याचा मुळीच उद्देश नाही." एका सामान्य मुलाची कुटुंबाला सावरत सावरत पुढे जाण्याची धडपड जाणून घेण्यासाठी मात्र हे आत्मकथन नक्कीच वाचले पाहिजे.

**- प्रा. संजय निचिते**
भ्रमणध्वनी - ९५४५०५२२०९
इ-मेल - sanjaynichite84@gmail.com